आधुनिक क्षेत्रीय प्राकृत भाषाएँ और उनका विकास

डॉ. सतेन्द्र कुमार जैन

भूमिका

भारतीय भाषाओं का इतिहास अत्यंत प्राचीन, समृद्ध तथा क्रमिक विकास की प्रक्रिया से जुड़ा हुआ है। यह विकास किसी एक काल में अचानक नहीं हुआ, बल्कि सहस्राब्दियों की भाषिक यात्रा का परिणाम है। संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश और आधुनिक भारतीय भाषाएँ—ये सभी एक ही भाषिक परंपरा की क्रमिक अवस्थाएँ हैं। जहाँ संस्कृत अभिजात वर्ग, विद्वानों एवं धार्मिक अनुष्ठानों की भाषा रही, वहीं प्राकृत जनसामान्य की सहज, सरल एवं व्यवहारिक भाषा थी। प्राकृत भाषाओं के माध्यम से ही आगे चलकर अपभ्रंश का विकास हुआ और अपभ्रंश से आधुनिक क्षेत्रीय भाषाओं ने जन्म लिया। इस प्रकार आधुनिक भाषाओं की जड़ें प्राकृत में निहित हैं।

प्राकृत भाषा क्या है

'प्राकृत' शब्द 'प्रकृति' से बना है, जिसका अर्थ है—स्वाभाविक या प्राकृतिक। संस्कृत के विपरीत प्राकृत वह भाषा थी, जो जनसाधारण द्वारा सहज रूप में बोली जाती थी। यह संस्कृत की अपेक्षा सरल, सहज एवं बोलचाल की भाषा थी। बौद्ध और जैन साहित्य में प्राकृत का व्यापक प्रयोग हुआ है।

प्राचीन काल में लोगों के द्वारा अपनी-अपनी भाषा में लोकव्यवहार किया जाता था। इसकारण इस भाषा को लोगों के द्वारा प्रयुक्त किये जाने वाली भाषा जनभाषा कहा जाने लगा। इस जनभाषा का इतना प्रभाव था कि महापुरुषों को अपने उपदेश भी इसी जनभाषा में देने पडे। कालान्तर में समाज में उच्चवर्गों के द्वारा सामान्यलोगों की भाषा से उपर उठकर उसे संस्कारित करने का भाव उत्पन्न हुआ, जिसे संस्कारित की गई भाषा संस्कृत कहा गया तथा जनभाषा को परिष्कृत करके उसके समूह को प्राकृत नामकरण किया।

प्राकृत का अर्थ पहले से की गई भाषा है अर्थात् जो भाषा पूर्व से ही समाज में प्रचलित है, उसे प्राकृत कहा गया। यह प्राकृत अन्य-अन्य क्षेत्रों की अपेक्षा विभिन्न प्रकार की है। ग्यारहवीं शताब्दी के विद्वान् नमिसाधु ने रुद्रट के काव्यालंकार के अध्याय 2 के श्लोक 12 की व्याख्या में प्राकृत भाषा के विषय में कहा है- **प्राकृतसंस्कृतमागधपिशाचभाषाश्च शौरसेनी च। षष्ठोऽत्र भूरिभेदो देशविशेषादपभ्रंशः।। प्राकृतेति सकलजगज्जन्तूनां व्याकरणादिभिरनाहितसंस्कारः सहजो वचनव्यापारः प्रकृतिः, तत्र भवं सैव वा प्राकृतम्।**[1] यहाँ पर प्राकृत भाषा को जनसमूह की भाषा कहा है। उसे व्याकरणादि के संस्कारों से रहित कहा है। व्याकरण के संस्कार से रहित होने से यह भाषा समूचे भारत वर्ष में जनभाषा के नाम से प्रतिष्ठित हुई।

प्राकृत का वर्गीकरण -

संस्कृतनिष्ठ विद्वानों ने भारत के छह खण्ड करके उसे छह भागों में विभक्त किया। जिसके आधार पर मगध प्रदेश की भाषा को मागधी, शूरसेन प्रदेश की भाषा को शौरसेनी, महाराष्ट्र की भाषा को महाराष्ट्री, पिशाच देश (पांचाल देश) की भाषा को पैशाची, अर्धमागधी क्षेत्र की भाषा को अर्धमागधी तथा पैशाची का एक भेद चूलिका पैशाची। इस प्रकार छह भागों में परिगणित किया है।

क्षेत्र के आधार के अतिरिक्त भरतमुनि ने नाट्यशास्त्र में पात्रों एवं उनकी जातियों की अपेक्षा से इस भाषा को अट्ठारह भागों में विभक्त किया है। इन अट्ठारह भेदों में आर्यभाषा के साथ द्रविड भाषाओं का भी समावेश किया गया है।

भरतमुनि तथा अन्यसाहित्यकारों ने शौरसेनी भाषा को प्रमुखतः से वर्णित किया है। व्याकरणकार ने महाराष्ट्री प्राकृत के बाद शौरसेनी प्राकृत भाषा को प्रमुख स्थान दिया तथा शेष भाषाओं को शौरसेनीवत् कहा है। यह व्याकरणकार का अपना कहने का तरीका था, जिससे लोगों में भ्रान्तियाँ उत्पन्न न हो। इस कारण उन्होंने व्याकरण को व्यवस्थित करने हेतु शौरसेनीवत् सूत्र का प्रयोग किया। जिसकारण शौरसेनी प्राकृत प्रमुख प्राकृत बन गई। नाट्यकार ने भी अधिकांश पात्रों की भाषा को शौरसेनी प्राकृत कहा है।

प्राकृत भाषा का विकास एवं अपभ्रंश की उत्पत्ति

समय के साथ प्राकृत भाषाओं में परिवर्तन होते गए। नियमों की शिथिलता, क्षेत्रीय प्रभाव और ध्वन्यात्मक बदलावों के कारण प्राकृत का परिवर्तित रूप **अपभ्रंश** कहलाया। अपभ्रंश का प्रयोग लगभग 6वीं से 12वीं शताब्दी तक हुआ। यह प्राकृत और आधुनिक भाषाओं के बीच की सेतु भाषा थी। प्राकृत भाषा ने साहित्यिक रूप धारण किया, तो लोक में प्रचलित जनभाषा का नामकरण अपभ्रंश हो गया। पूर्व में प्रचलित प्राकृत के भेदों में भी शिथिलता दृष्टिगत हुई, जिससे शौरसेनी प्राकृत शौरसेनी अपभ्रंश के नाम से, मागधी प्राकृत मागधी अपभ्रंश के नाम से, अर्धमागधी प्राकृत अर्धमागधी अपभ्रंश के नाम से, महाराष्ट्री प्राकृत महाराष्ट्री अपभ्रंश के नाम से, पैशाची प्राकृत पैशाची अपभ्रंश के नाम से तथा चूलिका पैशाची प्राकृत चूलिका पैशाची अपभ्रंश के नाम से प्रचलित हो गई।

अपभ्रंश से निःसृत अन्य आधुनिक भाषाएँ -

जिस प्रकार प्राकृत से अपभ्रंश भाषा का विकास हुआ, उसी प्रकार अपभ्रंश से अनेक आधुनिक भारतीय भाषाओं का विकास हुआ। जिसप्रकार प्राकृत के द्वारा साहित्यिक रूप धारण करने से जनभाषा का अपभ्रंश नाम हुआ था, उसी प्रकार जब कालान्तर में अपभ्रंश साहित्यिक रूप में प्रतिष्ठित हुई, उसके अपने कवि, अपना साहित्य एवं अपने श्रोता और पाठक बन गये, तो जनभाषा अन्य नाम से प्रचलित न होकर जनभाषा बिखर गई और बृहद् क्षेत्र से संकुचित क्षेत्र में आ गई। इसकारण से उपर्युक्त अपभ्रंश भाषाएँ कई क्षेत्रीय भाषा में परिवर्धित हो गई जो निम्न प्रकार से हैं।

- शौरसेनी अपभ्रंश से–**ब्रज, कन्नौजी, राजस्थानी, गुजराती, बुन्देली, मालवी, हिन्दी।**
- मागधी अपभ्रंश से–**मगही, भोजपुरी, बंगाली, अंगिका, मैथिली, असमिया, ओडिया, बिहारी, झारखंडी, वज्जिका, पालि।**
- महाराष्ट्री अपभ्रंश से–**मराठी, कोंकणी।**
- अर्धमागधी अपभ्रंश से–**अवधी, बघेली, छत्तीसगढी।**
- पैशाची अपभ्रंश से- **हरियाणवी, पंजाबी, डोगरी।**
- ब्राचड पैशाची अपभ्रंश से- **सिन्धी।**[2]

प्राकृत भाषा का आधुनिक भाषाओं में प्रभाव

(i) मागधी प्राकृत की आधुनिक भाषाएँ- मागधी प्राकृत से मुख्यतः नौ आधुनिक भाषाओं का विकास हुआ। इसके अतिरिक्त बिहार, झारखण्ड, असम, मणिपुर, नागालैण्ड, मिजोरम, त्रिपुरा आदि पूर्वोत्तर राज्यों में बोली जाने वाली जनभाषाएँ एवं जनबोलियों में भी मागधी प्राकृत का पूर्ण प्रभाव दिखाई देता है।

मगही भाषा - मगही भाषा मागधी प्राकृत का अपभ्रंश रूप है, यह बंगाली, असमिया, ओडिया, मैथिली, भोजपुरी, नेपाली आदि पूर्वी भाषाओं की जननी भाषा है। इसी भाषा से पालि भाषा की उत्पत्ति हुई है। भगवान बुद्ध के वचन मागधी भाषा में निःसृत हुये। उन्हें पालित करने वाली भाषा को पालि कहा जाने लगा। यह मागधी भाषा का विकसित रूप है। मगही मागधी का अपभ्रंश रूप है।

मैथिली भाषा - बिहार के मिथिला प्रान्त में बोली जाने वाली भाषा को मैथिली भाषा कहते है। यह भी उडिया, असमिया एवं बंग्ला के समान मागधी अपभ्रंश से निःसृत है। यह बिहार प्रान्त में सबसे महत्वपूर्ण भाषा के रूप में स्थापित है। इसे झारखण्ड में वर्ष 2018 से द्वितीय भाषा का दर्जा प्राप्त हुआ है। बिहार की समस्त भाषाओं में मैथिली भाषा ही एक भाषा है, जिसकी अपनी स्वयं की तिरहुत लिपि है। इसका विकास 14वीं शताब्दी में प्राकृत और अपभ्रंश से हुआ है।[3]

भोजपुरी भाषा - भोजपुरी भाषा का नामकरण प्राचीन भोजपुर नगर के आधार पर किया गया है। जिसके अनुसार राजा भोज के शासनकाल में इस भाषा का प्रयोग अत्यधिक होता था। इसका विस्तार क्षेत्र पश्चिम बिहार, पूर्वी उत्तरप्रदेश, पश्चिमी मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ के उत्तरपूर्वी भाग तथा नेपाल के तराई क्षेत्र तक है। इसकी उत्पत्ति मागधी अपभ्रंश से मानी जाती है। बंगाली, उडिया असमिया, मैथिली, मगही आदि भोजपुरी की सहोदरी है। नेपाल, फिजी और मॉरिशस में भोजपुरी को संवैधानिक मान्यता प्राप्त है। भारत के झारखण्ड राज्य में भोजपुरी द्वितीय राज्यभाषा है।[4]

वज्जिका भाषा - वज्जिका की प्राचीनता एवं गरिमा वैशाली गणतंत्र के साथ जुड़ी हुई है साथ ही जो ऐतिहासिक स्थल के रूप में जानी जाती है और महावीर की जन्मस्थली और भगवान बुद्ध की कर्मभूमि के रूप में भी विख्यात है। लगभग ५००ई.पू. भारत में स्थापित वैशाली गणराज्य (महाजनपद) का राज्य संचालन करने वाले अष्टकुलों, लिच्छवी, वृज्जी (वज्जि), ज्ञात्रिक, विदेह, उगरा, भोग, इक्ष्वाकु और कौरव में सबसे प्रधान कुलों बज्जिकुल एवं लिच्छवी द्वारा प्रयोग की जाने वाली बोली बज्जिका कहलाने लगी। राजकाज के लिए उस समय संभवतः प्राकृत का इस्तेमाल होता था जबकि धार्मिक कृत्य संस्कृत में होते थे। वज्जिका भाषा का विकास **मागधी प्राकृत** से हुआ है। यह मैथिली और भोजपुरी के मध्य के क्षेत्र तिरहुत प्रमंडल में

बोली जाती है। अब बिहार विश्वविद्यालय मुजफ्फरपुर के स्नातक पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है ।[5]

उत्तरी बिहार के चंपारण से लेकर पूर्णिया जिले तक पहले विदेह या तिरहुत कहलाने वाला प्राचीन राज्य था। ईसा पूर्व छठी सदी में विश्व के प्रथम गणतंत्र के रूप में यहाँ वैशाली गणराज्य की स्थापना हुई। प्राचीन भारतवर्ष के शक्तिशाली वैशाली महाजनपद में बज्जिसंघ द्वारा प्रयोग की जाने वाली बज्जिका, एक अति प्राचीन बोली या भाषा है, प्राचीन मिथिला का केन्द्र जनकपुर (वर्तमान में नेपाल का हिस्सा), बज्जिका भाषी क्षेत्र के अंतर्गत आता था। यहाँ आज भी बज्जिका ही बोली जाती है, इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि बज्जिका वास्तव में मैथिली का प्राचीन स्वरूप एवं मागधी का विकसित रूप है।[6]

अंगिका भाषा - अंगिका प्राचीन अंग महाजनपद अर्थात् भारत के उत्तर.पूर्वी एवं दक्षिण बिहार, झारखंड, बंगाल, असम, उड़ीसा और नेपाल के तराई के इलाक़ों में मुख्य रूप से बोली जाने वाली भाषा है। प्राचीन समय में अंगिका भाषा की अपनी एक अलग अंग लिपि भी थी।

प्राचीन अंगिका का विकास मागधी प्राकृत के अपभ्रंश रूप से हुआ है लगभग 4 से 5 करोड़ लोग अंगिका को मातृ-भाषा के रूप में प्रयोग करते हैं और इसके प्रयोगकर्ता भारत के विभिन्न हिस्सों सहित विश्व के कई देशों मे फैले हुए हैं। साहित्यिक भाषा भारत की अंगिका को साहित्यिक भाषा का दर्जा हासिल है। अंगिका साहित्य का अपना समृद्ध इतिहास रहा है और आठवीं शताब्दी के कवि सरह या सरहपा को अंगिका साहित्य में सबसे ऊँचा दर्जा प्राप्त है। सरहपा को हिन्दी एवं अंगिका का आदि कवि माना जाता है। इस भाषा का नाम भागलपुरी इसकी स्थानीय राजधानी के कारण पड़ा। इसके अलावा अंगिका को अंगी, अंगीकार, चिक्का चिकि और अपभ्रंश कहा जाता है। अंगिका की उपभाषाएं हैं- देशी, दखनाहा, मुंगेरिया, देवघरिया, गिध्होरिया, धरमपुरिया।[7]

पालि- यह मागधी भाषा का भेद है, गौतम बुद्ध की व्यावहारिक भाषा मागधी थीं। गौतम बुद्ध अपने उपदेश इसी भाषा में देते थे। उन वचनों का संरक्षण होने के कारण मागधी का कुछ परिवर्तित रूप पालि भाषा कहलाने लगा अथवा यह कहे कि जिस भाषा में बुद्ध के वचन पालित हो उसे पालि भाषा कहते हैं। इसीप्रकार गायगर ने भी पालि भाषा का मूलाधार मागधी भाषा को ही सिद्ध किया है। पालि भाषा का ध्वनितत्त्व, शब्दचयन, वाक्यविन्यास आदि मागधी भाषा के समान ही है।[8]

बंगाली भाषा - बंगाली (बंग्ला) भाषा की उत्पत्ति भी मागधी अपभ्रंश से मानी जाती है। मागधी अपभ्रंश भाषा से पृथक् रूप ग्रहण करने के कारण बंगाली भाषा को स्वतंत्र भाषा का स्वरूप प्रदान किया गया है। यह मागधी अपभ्रंश का विकसित रूप है। इसकी उत्पत्तिकाल 1000 ई. के लगभग मानी जाती है।[9]

असमिया भाषा - असमिया भाषा असम प्रान्त में बोली जाने वाली मुख्य भाषा है। इस भाषा का मूल स्रोत मागधी अपभ्रंश माना जाता है। यह भी कहा जाता है कि असमिया भाषा प्राकृत की कामरूपी बोली है। असमिया भाषा का प्रारम्भ 6 वीं शताब्दी से माना जाता है। इसका व्यवस्थित रूप 13-14 शताब्दी में मिलना प्रारम्भ हो गया था।[10]

ओडिया भाषा - उडिया भाषा ओडिसा प्रान्त में बोली जाने वाली मुख्य भाषा है। इसका मैथिली, बंगाली, असमिया आदि पूर्वी भाषाओं से घनिष्ठ संबंध रहा है। यह भी मागधी अपभ्रंश का विकसित रूप है। इसकारण इस भाषा को मागधी प्राकृत का वंशधर कहा जाता है। इसका विकास मागधी अपभ्रंश से 10 शताब्दी में हुआ है।[11]

(ii) शौरसेनी प्राकृत की आधुनिक भाषाएँ - भारत के शूरसेन प्रदेश में बोली जाने वाली प्राकृत को शौरसेनी प्राकृत के नाम से जाना जाता है। पूर्व काल से वर्तमान तक शूरसेन प्रदेश मथुरा के अन्तर्गत आता था। जो वर्तमान में शौरीपुर के नाम से जाना जाता है। इस शौरसेनी प्राकृत से ब्रज, कन्नौजी, गुजराती, राजस्थानी, बुन्देली, बघेली, मालवी, अवन्तिका आदि आधुनिक भाषाएँ विकसित हुई है।

ब्रज भाषा - शूरसेन प्रदेश का सबसे निकटवर्ती क्षेत्र ब्रज है। यहाँ की भाषा को ब्रज भाषा कहा जाता है। यह भाषा शौरसेनी प्राकृत की अपभ्रंश से विकसित हुई है। इसका विकास मुख्यतः पश्चिमी उत्तरप्रदेश और उससे लगते राजस्थान, मध्यप्रदेश व हरियाणा में हुआ। मथुरा, अलीगढ़, हाथरस, आगरा, मैनपुरी, एटा, भरतपुर, हिण्डौनसिटी, धौलपुर, ग्वालियर, मुरैना, पलवल आदि इलाकों में आज भी यह मुख्य संवाद की भाषा है। इस एक पूरे इलाके में ब्रजभाषा या तो मूल रूप में या हल्के से परिवर्तन के साथ विद्यमान है। इसीलिये इस इलाके के एक बड़े भाग को बृजाञ्चल या बृजभूमि भी कहा जाता है।

भारतीय आर्यभाषाओं की परम्परा में विकसित होनेवाली "ब्रजभाषा" शौरसेनी अपभ्रंश की कोख से जन्मी है। जब से गोकुल वल्लभ संप्रदाय का केंद्र बना, ब्रजभाषा में कृष्ण विषयक साहित्य लिखा जाने लगा। इसी के प्रभाव से ब्रज की बोली साहित्यिक भाषा बन गई। भक्तिकाल के प्रसिद्ध महाकवि महात्मा सूरदास से लेकर आधुनिक काल के विख्यात कवि श्री वियोगी हरि तक ब्रजभाषा में प्रबन्ध काव्य तथा मुक्तक काव्य समय समय पर रचे जाते रहे।[12]

राजस्थानी भाषा - राजस्थानी भाषा की उत्पत्ति शौरसेनी के गुर्जर अपभ्रंश से मानी जाती है। कुछ विद्वान राजस्थानी भाषा को नागर अपभ्रंश से उत्पन्न हुआ भी मानते हैं। उद्योतन सूरी के ग्रंथ कुवलयमाला में अट्ठारह देशी भाषाओं का वर्णन मिलता है। इसमें से एक मरु भाषा भी है जो पश्चिमी राजस्थान की भाषा थी।

इसी तरह पिंगल शिरोमणि और अबुल फज़ल की आईना-ए-अकबरी में भी मारवाड़ी शब्द का प्रयोग किया गया है। राजस्थान की भाषा के लिए 'राजस्थानी' शब्द सबसे पहले जॉर्ज अब्राहम गियर्सन ने 1912 में लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया (Linguistics Survey of India) ग्रंथ में प्रयुक्त किया। इसमें गियर्सन ने प्रदेश में बोली जा रही सभी भाषाओं के लिए एक सामूहिक नाम दिया था। यह नाम प्रदेश की भाषा के लिए मान्य किया जा चुका है। केंद्रीय साहित्य अकादमी ने भी राजस्थानी भाषा को एक स्वतंत्र भाषा के रूप में मान्यता दे दी है लेकिन अभी इसे संवैधानिक मान्यता प्राप्त नहीं हुई है।[13]

गुजराती भाषा- गुजराती भाषा आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं में से एक है और **इसका विकास शौरसेनी प्राकृत के परवर्ती रूप 'नागर अपभ्रंश' से हुआ है**। गुजराती भाषा का क्षेत्र गुजरात, सौराष्ट्र और कच्छ के अतिरिक्त महाराष्ट्र का सीमावर्ती प्रदेश तथा राजस्थान का दक्षिण पश्चिमी भाग भी है। सौराष्ट्री तथा कच्छी इसकी अन्य प्रमुख बोलियाँ हैं।[14]

भारत में यह गुजरात राज्य में आधिकारिक भाषा है, साथ ही दादर और नगर हवेली और दमन और दीव के केंद्र शासित प्रदेश में एक आधिकारिक भाषा है।

गुजराती कई देशों में भी बोली जाती है: बांग्लादेश, बोत्सवाना, कनाडा, फिजी, केन्या, मलावी, मॉरीशस, मोजाम्बिक, ओमान, पाकिस्तान, सिंगापुर, दक्षिण अफ्रीका, तंजानिया, युगांडा, यूनाइटेड किंगडम, संयुक्त राज्य अमेरिका, जाम्बिया और जिम्बाब्वे।

बुंदेली भाषा - बुंदेली भारत के एक विशेष क्षेत्र बुन्देलखण्ड में बोली जाती है। यह शौरसेनी प्राकृत से विकसित हुई है। एक हजार वर्ष पहले अपभंश के रूप बुंदेली में प्राप्त होते है। बुंदेलखण्ड में निवास करने वाली जो जातियाँ हैं, इनमें कोल, निषाद, पुलिंद, किराद, नाग, सभी की अपनी स्वतंत्र भाषाएं थी, जो विचारों अभिव्यक्तियों की माध्यम थीं। इनका वर्णन भरतमुनि ने नाट्यशास्त्र में विविध बोली बोलने वाले समूह के रूप में किया है, उनके समूह के नाम से ही उनकी बोली और भाषा का नामकरण किया है। शबर, भील, चांडाल, सजर, द्रविड़ोद्भवा, हीना, वने वारणम्। हेमचंद्र सूरि ने पामरजनों में प्रचलित प्राकृत अपभ्रंश का व्याकरण ग्यारहवीं शती में लिखा, इस समय मध्यदेशीय भाषा का विकास हो रहा था। हेमचन्द्र के अपने देशीशब्दकोश में विंध्येली के अनेक शब्दों के निघण्टु दिये हैं।[15]

एक हजार ईस्वी में बुंदेली अपभ्रंश के उदाहरण प्राप्त होते हैं। इसमें देशज शब्दों की बहुलता थी।

मध्यदेशीय भाषा का प्रभुत्व अविच्छन्न रूप से ईसा की प्रथम सहस्त्राब्दी के सारे काल में और इसके पूर्व कायम रहा। नाथ तथा नाग पंथों के सिद्धों ने जिस भाषा का प्रयोग किया, उसके स्वरुप अलग-अलग जनपदों में भिन्न-भिन्न थे। वह देशज प्रधान लोकभाषा थी। इसके पूर्व भी भवभूति ने उत्तर रामचरित के ग्रामीणजनों की भाषा विंध्येली प्राचीन बुंदेली कही है।

संभवतः चंदेल नरेश गंडदेव (सन् ९४० से ९९९ ई.) तथा उसके उत्तराधिकारी विद्याधर (९९९ ई. से १०२५ ई.) के काल में बुंदेली के प्रारंभिक रूप में महमूद गजनवी की प्रशंसा की कतिपय पंक्तियां लिखी गई। इसका विकास रासो काव्य धारा के माध्यम से हुआ।

मालवी भाषा - मालवी भारत के मालवा क्षेत्र की भाषा है। **यह मालवी भाषा शौरसेनी प्राकृत के अपभ्रंश रूप से विकसित हुई है।** इसका क्षेत्र भू-भाग अत्यंत विस्तृत है। पूर्व दिशा में बेतवा नदी, उत्तर.पश्चिम में चम्बल और दक्षिण में पुण्य सलिला नर्मदा नदी के बीच का प्रदेश मालवा है। मालवा क्षेत्र मध्यप्रदेश और राजस्थान के लगभग बीस जिलों में विस्तार लिए हुए हैं। इन क्षेत्रों के दो करोड़ से अधिक निवासी मालवी और उसकी विविध उपबोलियों का व्यवहार करते हैं। वर्तमान में मालवी भाषा का प्रयोग मध्यप्रदेश के उज्जैन संभाग के आगर मालवा, नीमच, मन्दसौर, रतलाम, उज्जैन, देवास एवं शाजापुर जिलों, इंदौर संभाग के धार, झाबुआ, अलीराजपुर, हरदा और इंदौर जिलों, सीहार, राजगढ, भोपाल, रायसेन और विदिशा जिलों, ग्वालियर संभाग के गुना जिले, राजस्थान के झालावाड़, प्रतापगढ़, बांसवाड़ा एवं चित्तौड़गढ़ जिलों के सीमावर्ती क्षेत्रों में होता है। मालवी की सहोदरा निमाड़ी भाषा का प्रयोग बडवानी, खरगोन, खंडवा, हरदा और बुरहानपुर जिलों में होता है। मध्यप्रदेश के कुछ जिलों में मालवी तथा अन्य निकटवर्ती बोलियों जैसे निमाड़ी, बुंदेली आदि के मिश्रित रूप प्रचलित हैं। इन जिलों में हरदा, होशंगाबाद, बैतूल, छिन्दवाड़ा हैं।[16]

मालवी का केन्द्र उज्जैन, इंदौर, देवास और उसके आसपास का क्षेत्र है। इसी मध्यवर्ती मालवी को आदर्श या केंद्रीय मालवी कहा जाता है, जो अन्य निकटवर्ती बोलियों के प्रभाव से प्रायः अछूती है। आगर मालवा जिला तो प्रसिद्ध ही मालवा उपनाम से है क्योंकि जानकारों के अनुसार बहुत ज्यादा हद तक केंद्रीय या आदर्श मालवी इस जिले में ही बोली जाती है। केंद्रीय या आदर्श मालवी के अलावा मालवी के कई उपभेद या उपबोलियां भी अपनी विशिष्ट पहचान रखती हैं। मालवी की प्रमुख 6 उपबोलियाँ हैं-

केंद्रीय या आदर्श मालवी, सोंधवाड़ी, रजवाड़ी, दशोरी या दशपुरी, उमठवाड़ी और भीली। मालवी भाषा को प्रभावित करने वाली गुजराती, राजस्थानी तथा बुन्देली तीनों भाषाएँ शौरसेनी प्राकृत के अपभ्रंश रूप से विकसित हैं, इसकारण भी मालवी को बोलना एवं समझना इन्हीं क्षेत्रों के लोगों के लिये सरल होता है।

(iii) अर्धमागधी प्राकृत की आधुनिक भाषाएँ- अर्धमागधी मूलतः शौरसेनी और मागधी की मिश्रित भाषा है। यह शूरसेन प्रान्त तथा मगध प्रान्त की सीमा से लगे हुये स्थान में बोली जाने वाली भाषा है। मगध के समीप अर्धमागधी में मागधी का प्रभाव अधिक है, तो शूरसेन प्रदेश के निकट सीमावर्ती प्रान्त में शौरसेनी का प्रभाव अधिक है।

अवधी भाषा - अवधी भाषा उत्तरप्रदेश की सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है, यह लगभग उत्तरप्रदेश के 19 जिलों में बोली जाती है। विकास की दृष्टि से अवध प्रान्त ब्रज,

कन्नौजी और भोजपुरी के मध्य पड़ता है। ब्रज भाषा की उत्पत्ति शौरसेनी प्राकृत की अपभ्रंश से तथा भोजपुरी का विकास मागधी प्राकृत की अपभ्रंश से हुआ है। अवध प्रदेश दोनों के मध्य में होने से दोनों भाषाओं का प्रभाव इस क्षेत्र में दिखाई देता है। जिसे हम अर्धमागधी प्राकृत की अपभ्रंश कह सकते हैं।[17]

बघेली भाषा - बघेली बोली का उद्भव अर्धमागधी अपभ्रंश के ही एक क्षेत्रीय रूप से हुआ है। यद्यपि जनमत इसे अलग बोली मानता है, किंतु भाषा वैज्ञानिक स्तर पर पर यह अवधी की ही उपबोली ज्ञात होती है और इसे दक्षिणी अवधी भी कह सकते हैं। बघेली या बाघेली बोली, हिन्दी की एक बोली है जो भारत के बघेलखण्ड क्षेत्र में बोली जाती है। बघेले राजपूतों के आधार पर रीवा तथा आसपास का क्षेत्र बघेलखंड कहलाता है और वहाँ की बोली को बघेलखंडी या बघेली कहलाती हैं।[18] इसके अन्य नाम मन्नाडी, रिवाई, गंगाई, मंडल, केवोत, केवाती बोली, केवानी और नागपुरी हैं। बघेली बोली के क्षेत्र के अंतर्गत रीवाँ अथवा रीवा, नागोद, शहडोल, सतना, मैहर तथा आसपास का क्षेत्र आता है। इसके अतिरिक्त बघेली बोली महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश और नेपाल में भी बोली जाती है।

छत्तीसगढी भाषा - छत्तीसगढ प्रदेश में बोली जाने वाली प्रमुख भाषा है। यह वर्ष 2008 में छत्तीसगढ प्रान्त की राज्यभाषा घोषित की गई है। यह भाषा अर्धमागधी अपभ्रंश से विकसित हुई है। जिसे पूर्वी हिन्दी की उपशाखा में गिना जाता है। पूर्वी हिन्दी में मुख्यतः तीन भाषाएँ आती हैं। छत्तीसगढी, बघेली, और अवधी। छत्तीसगढी भाषा अर्धमागधी के अधिक निकट है। इसकारण इसे अर्धमागधी अपभ्रंश से विकसित माना जा सकता है।[19]

(iv) पैशाची प्राकृत की आधुनिक भाषाएँ- पैशाची भाषा का विकास शौरसेनी प्राकृत भाषा से हुआ है। यह शौरसेनी जब पांचाल, कैकेय और उत्तर के अन्य देशों में प्रचलित हुई तो इसका नाम पैशाची प्राकृत हो गया। इस पैशाची प्राकृत से पंजाबी, हरियाणवी, डोंगरी आदि भाषाओं एवं पहाडी भाषाओं का विकास हुआ।

पंजाबी भाषा- पंजाब में बोली जाने वाली पंजाबी भाषा पैशाची अपभ्रंश से विकसित हुई है। पुराकाल में प्राकृत व्याकरण रचनाकार मार्कण्डेय ने पैशाची भाषा का क्षेत्र केकय, पांचाल तथा शूरसेन प्रदेश को मुख्य रूप से माना है, इसके अतिरिक्त अन्य प्रदेशों में भी पैशाची भाषा का प्रयोग प्राप्य है।[20] वर्तमान में पांचाल प्रदेश ही वर्तमान का पंजाब प्रदेश है। पांचाल की प्राकृत में व्युत्पत्ति है पांच + आल, पांच छोटे प्रवाह अर्थात् पांच छोटे प्रवाह की नदियों के समूह का नाम पांचाल था। इसीप्रकार की व्युत्पत्ति फारसी विद्वानों ने पंजाब प्रदेश की है।[21]

पंजाबी नाम अर्वाचीन है। पंजाब शब्द में दो फारसी शब्द पंज और आब का मेल है। जिसका अर्थ पांच नदियों का समूह है। दोनों भाषाओं की तुलना की जाये तो प्राचीन शब्द पांचाल का परवर्ती अथवा अर्वाचीन रूप पंजाब प्रतीत होता है।

वर्तमान में पंजाबी भाषा के अधिकांश शब्द प्राकृत से समानता रखते हैं। कुछ शब्द प्राकृत में पंजाबी के उसीप्रकार मिलते हैं, जिसप्रकार आज पंजाबी में प्रयुक्त होते हैं।[22] यथा-

पंजाबी	**प्राकृत**	**संस्कृत**	**हिन्दी**	**पंजाबी**	**प्राकृत**	**संस्कृत**	**हिन्दी**
कुहाडी	कुहाडी	कुठार	कुल्हाडी	**ठाण**	ठाण	स्थान	स्थान
कुक्खि	कुच्छि	कुक्षि	कोख	**डोर**	डोर	दवर	डोर (रस्सी)
कुट्टणी	कुट्टणी	कुट्टनी	कुट्टनी	**डाल**	डाल	शाखा	डाल
कुत्ती	कुत्ती	कुक्करी	कुत्ती(कुतिया)	**डोंगर**	डोंगर	ऊँचा पर्वत	ऊँचा पर्वत

ग्रियर्सन ने (लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया, भाग 1, 8 तथा 9 में) पूर्वी पंजाबी को "पंजाबी" और पश्चिमी पंजाबी को "लहंदी" कहा है। वास्तव में पूर्वी पंजाबी और पश्चिमी पंजाबी, पंजाबी की दो उपभाषाएँ हैं, जैसे पूर्वी हिंदी और पश्चिमी हिंदी। पश्चिमी पंजाब की बोलियों में मुलतानी, डेरावाली, अवाणकारी और पोठोहारी एवं पूर्वी पंजाबी की बोलियों में पहाड़ी, माझी, दूआबी, पुआधी, मलवई और राठी प्रसिद्ध हैं। पश्चिमी पंजाबी और पूर्वी पंजाबी की सीमारेखा रावी नदी मानी गई है।

इस प्रदेश का प्राचीन नाम 'सप्तसिंधु' है। भाषा के लिए "पंजाबी" शब्द 1670 ई. में हाफिज़ बरखुदार (कवि) ने पहली बार प्रयुक्त किया; किंतु इसका साधारण नाम बाद में भी "हिंदी" या "हिंदवी" रहा है, यहाँ तक कि रणजीतसिंह का दरबारी कवि हाशिम महाराज के सामने अपनी भाषा (पंजाबी) को हिंदी कहता है।

डोगरी भाषा - डोगरी भारत के जम्मू. कश्मीर राज्य की दूसरी मुख्य भाषा है। यह भारोपीय भाषा परिवार के भारतीय.आर्य भाषा समूह की सदस्य है। अन्य आधुनिक भारतीय.आर्य भाषाओं के समान डोगरी का भी विकास प्राकृत और अपभ्रंश भाषा से हुआ है यह लगभग 10वीं शताब्दी में विकसित हुई थी।[23] इसमें ध्वनि संरचना में विकास की तीन स्तरीय प्रक्रिया दिखाई देती है, जो शौरसेनी प्राकृत से इसकी निकटता को प्रदर्शित करती है, लेकिन वैदिक काल से इसके वर्तमान स्वरूप तक विकास के दौरान डोगरी ने सभी चरणों की विशेषताओं को संरक्षित रखा है, जैसा डोगरी शब्द मुआ संस्कृत के मृतः शब्द का प्राकृत रूप है, प्राकृत में ऋकार को उकार परिवर्तन होता है जिसका मृ का मु हो गया तथा का तकार लोप भी प्राकृत के सिद्धान्तों से घटित होता है।[24] डोगरी में शब्दों के आदि में य ध्वनि नहीं आती, इनके स्थान पर ध्वनि उच्चरित होती है। यजमान का जजमान यश का जस।[25] इसप्रकार डोगरी भाषा शौरसेनी प्राकृत के परवर्ती रूप पैशाची प्राकृत की उपभाषा है।

सिंधी- सिंधी भारत के पश्चिमी हिस्से और मुख्य रूप से सिन्ध प्रान्त में बोली जाने वाली एक प्रमुख भाषा है। यह सिन्धी हिन्दू समुदाय (समाज) की मातृ.भाषा है। गुजरात के कच्छ जिले में सिन्धी बोली जाती है और वहाँ इस भाषा को कच्छी भाषा कहते हैं। इसका सम्बन्ध भाषाई परिवार के स्तर पर आर्य भाषा परिवार से है जिसमें संस्कृत समेत हिन्दीए पंजाबी और गुजराती भाषाएँ शामिल हैं। सिन्धी भाषा सिन्ध प्रदेश की आधुनिक भारतीय.आर्य भाषा के पैशाची नाम की प्राकृत और व्राचड नाम की अपभ्रंश से संबंधित है।[26] सिन्धी के पश्चिम में बलोची, उत्तर में लहँदी, पूर्व में मारवाड़ी और दक्षिण में गुजराती का क्षेत्र है।

(v) महाराष्ट्री प्राकृत की आधुनिक भाषाएँ- महाराष्ट्री प्राकृत को प्राकृत में आदर्श प्राकृत माना गया है। महाराष्ट्र प्रान्त में बोली जाने वाली प्राकृत को महाराष्ट्री प्राकृत कहते हैं। इस भाषा से दो भाषाएँ विकसित हुई, मराठी और कोंकणी। मराठी की शुरुआत काफी पहले हुई थी, लेकिन साहित्यिक शुरुआत केवल 13वीं सदी में हुई। यह पाली, महाराष्ट्री और महाराष्ट्री अपभ्रंश के माध्यम से निकलती है। महाराष्ट्री प्राकृत प्राकृत भाषाओं में सबसे लोकप्रिय थी और व्यापक रूप से पश्चिमी और दक्षिणी भारत में बोली जाती थी।

मराठी भाषा - भारत के महाराष्ट्र प्रांत की इकलौती अधिकारिक राजभाषा है। महाराष्ट्र के बहुसंख्य लोग मराठी बोलते है। भाषाई परिवार के स्तर पर यह एक आर्य भाषा है। मराठी भारत की प्रमुख भाषाओं में से एक है। यह महाराष्ट्र और गोवा की राजभाषा है तथा पश्चिम भारत की सह-राज्यभाषा हैं। मातृभाषियों कि संख्या के आधार पर मराठी विश्व में दसवें और भारत में तीसरे स्थान पर है। इसे बोलने वालों की कुल संख्या लगभग 10 करोड़ है। यह भाषा 2300 सालों से अस्तित्व में है और इसका मूल प्राकृत से है।[27]

कोंकणी भाषा – यह गोवा, महाराष्ट्र के दक्षिणी भाग, कर्नाटक के उत्तरी भाग, केरल के कुछ क्षेत्रों में बोली जाती है। भाषायी तौर पर यह 'आर्य' भाषा परिवार से संबंधित है और मराठी से इसका काफी निकट का संबंध है। राजनैतिक तौर पर इस भाषा को अपनी पहचान के लिये मराठी भाषा से काफी संघर्ष करना पड़ा है। अब भारतीय संविधान के तहत कोंकणी को आठवीं अनुसूची में स्थान प्राप्त है। इसका विकास महाराष्ट्री प्राकृत की अपभ्रंश से हुआ है। यह मराठी भाषा से अधिक संबंधित है।[28] इसकारण इसका विकास कई वर्षों तक मराठी के रूप में ही प्रचलित रहा।

भारत के पश्चिमी तट स्थित कोंकण प्रदेश में प्रचलित बोलियों को सामान्यत: कोंकणी कहते है। ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंधों के परिणाम स्वरूव इस प्रदेश में बोली जानेवाली भाषा के तीन रूप हैं-

(1) मराठीभाषी क्षेत्र से संलग्न मालवण-रत्नगिरि क्षेत्र की भाषा;

(2) मंगलूर से संलग्न दक्षिण कोंकणी क्षेत्र की भाषा जिसका कन्नड़ से संपर्क है तथा

(3) मध्य कोंकण अथवा गोमांतक (गोवा) कारवार में प्रचलित भाषा।

संस्कृत भाषा तथा प्राकृत - साहित्यिक दृष्टि से भारतीय साहित्य परम्परा को प्राकृत साहित्य का अमूल्य योगदान रहा है। प्राचीन काल में मनोरंजन के लिये नाटकों का मंचन किया जाता था। उन नाटकों में उच्चवर्ग के पात्र संस्कृत भाषा का प्रयोग करते थे तथा साधारणवर्ग के लोग विभिन्न प्राकृतों का प्रयोग करते थे, इसप्रकार के नाटकों से श्रोतागण अपनी-अपनी भाषा के प्रयोग होने पर नाटकों में रुचि रखते थे और रसानुभूति का आनन्द लेते थे, परन्तु इन नाटकों का जब से संस्कृत रूपान्तरण हुआ और मंचन केवल संस्कृत भाषा में होना प्रारम्भ हुआ; तभी से साधारण लोगों की अभिरुचि संस्कृत नाटकों से हट गई, केवल संस्कृत भाषाई ही नाटकों में अभिरुचि लेने लगे। इससे संस्कृत भाषा का क्षेत्र सीमित ही नहीं हुआ अपितु अल्प हो गया। उपर्युक्त विवरण से विपरीत संस्कृत नाटकों में पूर्व की तरह भरतमुनि के नाट्यशास्त्र के अनुरूप पात्रों के आधार पर संस्कृत, प्राकृत और प्रान्तीय भाषाओं का प्रयोग किया जाये, तो संस्कृतभाषाई लोगों के साथ क्षेत्रीय तथा अन्य साधारण लोगों की अभिरुचि संस्कृत नाटकों में दिखाई देगी, साथ ही संस्कृत भाषा का क्षेत्र असीमित और विस्तृत होगा। प्राकृत भाषा के साथ संस्कृत का अटूट सम्बन्ध होने से प्रत्येक क्षेत्र में संस्कृत का प्रवेश हो सकेगा।

संस्कृत काव्यों में काव्यालंकार आदि अलंकार शास्त्रों में रसानुभूति कराने वाले उदाहरणों में प्राकृत भाषा के उदाहरण अधिक मात्रा में उपलब्ध हैं। प्राकृत भाषा के ज्ञान होने पर रामचरित मानस आदि के परायण करने की अनुभूति अद्वितीय होगी।

अन्त में यह कहना आवश्यक है कि प्राकृत भाषा के अध्ययन-अध्यापन एवं शोधकार्य करने से जैनागम, बौद्धसाहित्य एवं वेदों में निहित सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक आदि मूल्यों का उद्घाटन भी हो सकेगा।

साहित्यकारों के अनुसार व्यवस्थित और संस्कारित संस्कृत भाषा तालाब में स्थित जल के समान निर्मल है, उसमें परिवर्तन असंभव है, वह नियमों में बंधी हुई है और प्राकृत भाषा नदी के बहते नीर के समान प्रवाहित है। जब वैयाकरणों ने संस्कृत और प्राकृत दोनों भाषाओं के एक साथ अध्ययन की सुविधा के लिये संस्कृत के समान प्राकृत भाषाओं का भी व्याकरण निर्माण किया, तो पूर्व में प्राकृतभाषाओं में निहित जनभाषाओं ने अपना स्वतंत्र रूप धारण किया। फलस्वरूप विभिन्न आधुनिक भारतीय भाषाओं का विकास हुआ, वैयाकरणों के द्वारा इन्हें प्राकृत भाषाओं का भ्रष्ट रूप कहा गया, जो इन आधुनिक भाषाओं का अलंकार बन गया। देश में प्रचलित आधुनिक भाषाएँ पाँच प्रकार की प्राकृतों के भ्रष्ट होने से निःसृत हुई, जिन्हें उन्हीं प्राकृतों का अपभ्रंश रूप माना गया। मागधी प्राकृत के अपभ्रंश रूप से मगही, भोजपुरी, बंगाली, अंगिका, मैथिली, असमिया, ओडिया, बिहारी, झारखंडी, वज्जिका, पालि आदि पूर्वोत्तर की आधुनिक भाषाएँ, शौरसेनी प्राकृत के अपभ्रंश रूप से ब्रज, कन्नौजी, राजस्थानी, गुजराती, बुन्देली,

मालवी आदि मध्यप्रान्तीय आधुनिक भाषाएँ, अर्धमागधी प्राकृत के अपभ्रंश रूप से अवधी, बघेली, छत्तीसगढी आदि प्रदेशों की आधुनिक भाषाएँ, महाराष्ट्री प्राकृत के अपभ्रंश रूप से मराठी और कोंकणी आदि दक्षिण प्रान्तीय आधुनिक भाषाओं और पैशाची प्राकृत के अपभ्रंश रूप से हरियाणवी, पंजाबी, डोंगरी आदि उत्तरप्रान्तीय आधुनिक भाषाओं का विकास हुआ तथा पैशाची के ब्राचड रूप से सिन्धी भाषा विकसित हुई।

यह कहना युक्ति संगत होगा कि वर्तमान में प्रचलित आधुनिक भारतीय भाषाओं की उपजीव्य प्राकृत भाषा है। प्राकृत के विकास में इन सभी आधुनिक भारतीय भाषाओं का विकास निहित है।

निष्कर्ष - भारतदेश भाषा और जाति के समूहों से आवृत्त है। यहाँ के निवासी अपने धर्म पालन एवं भाषा व्यवहार के लिये स्वतंत्र है। प्रत्येक जाति और धर्म के व्यक्ति दूसरे जाति, धर्म के व्यक्ति की भाषा व्यवहार से परस्पर में प्रभावित होते हैं, इसकारण प्रत्येक वर्ग की स्वतंत्र भाषा होने के बावजूद आपस में भाषाओं का आदान-प्रदान होता है। एक भाषा के नष्ट होने पर दूसरे भाषा में पाये जाने वाले कुछ लक्षण, शब्द, धातुएँ, देशीशब्द, बोलने का तौर तरीका आदि भी नष्ट हो जाते हैं।

भारत देश में प्रचलित भारतीय भाषाओं की भी इसीप्रकार की व्यवस्था है। इस शोधपरख लेख से यह स्पष्ट होता है कि भारत में प्राचीन समय से केवल जनभाषा प्रचलित थी। जिसका अपना कोई व्याकरण नहीं था। वाक्य व्यवस्थित नहीं थे। आधुनिक व्याकरण के समान वचन, लिंग, विभक्ति के बिना भी भाषा का व्यवहार होता था। यह भाषा अनेक प्रकार की थी। हर जाति वर्ग की अपनी स्वतंत्र भाषा थी, फिर भी छोटे-छोटे क्षेत्रों को आधार बनाकर एक बडे क्षेत्र के आधार पर भाषाओं का वर्गीकरण किया गया।

इसप्रकार अनेकों भाषा समूहों, बोलियों एवं उपबोलियों को एक-एक भाषा समूहों में व्यवस्थित किया गया। कालान्तर में जब इन जनभाषाओं को संस्कारित करके आधुनिक संस्कृत भाषा का निर्माण हुआ, तब इन जनभाषा के समूहों को भी व्यवस्थित करने के लिये जनभाषाओं का एक समूह बनाकर इसका नामकरण प्राकृत भाषा किया गया। चूँकि संस्कृत भाषा जन भाषा का संस्कारित रूप है, तो देश में प्रचलित किस-किस जनभाषा को संस्कारित कर इसका परिष्कार किया गया, यह बता पाना संभव नहीं हो पाता और संस्कृत के एक सूत्रीय परिष्कृत व्याकरण ग्रन्थ की रचना भी नहीं हो पाती। संभवतः इसीकारण समस्त जनभाषाओं का समूह निर्माणकर उसका प्राकृत नामकरण किया गया। जिसके आधार पर संस्कृत भाषा को व्याख्यायित करना सरल हो गया।

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि क्षेत्रीय भाषाओं के विकास के लिये प्राकृत भाषा का विकास एवं प्राकृत भाषा के विकास होने पर क्षेत्रीय आधुनिक भाषाओं का विकास निर्भर है।

वर्तमान सरकार में छह भारतीय समुदाय अल्पसंख्यक समाज से संबंधित हैं जिनमें, बौद्ध, जैन और सिक्ख समुदाय के आधारभूत सिद्धान्त वैदिक सिद्धान्तों के अत्यधिक समीप हैं। यदि सरकार द्वारा इन अल्पसंख्यक समुदाय की भाषा का संरक्षण किया जाता है, तो वेदों में निहित अहिंसादि मूल सिद्धान्तों का भी संरक्षण हो सकेगा।

सन्दर्भ सूची -

1. काव्यालंकार- रुद्रट, अध्याय-2, श्लोक-12 की व्याख्या, (प्राकृतभाषा और साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, पृष्ठ-14)
2. जैन ग्रन्थ प्रशस्ति संग्रह (अपभ्रंश जैनग्रन्थ प्रशस्ति संग्रह), द्वितीय भाग, सं.- पं. परमानन्द जैन, शास्त्री, पृष्ठ 14, वीरसेवा मंदिर, दरियागंज, नई दिल्ली, संस्करण- 1963
3. मैथिली भाषा का इतिहास- विकिपीडिया
4. भोजपुरी भाषा विकिपीडिया- Bhojpuri Ethnologue- World Language-2009
5. भारत की भाषाएँ- लेखक- डॉ. राजमल बोस, पृष्ठ- 104, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण- 2005
6. बज्जिका भाषा का इतिहास- विकिपीडिया
7. अंगिका भाषा का इतिहास, अंगिका भारतकोश, विकिपीडिया
8. प्राकृत भाषा और साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, भाषा विकास और प्राकृत, पृष्ठ- 27, डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री, तारा बुक एजेन्सी, वाराणसी।
9. बंग्ला साहित्य का संक्षिप्त इतिहास, डॉ. सत्येन्द्र, पृष्ठ- 3 प्रकाशन शाखा, सूचना विभाग, उत्तरप्रदेश, संस्करण- 1961
10. असमिया भाषा विकिपीडिया
11. ओडिया भाषा विकिपीडिया
12. लेख-ब्रजभाषा के अल्पज्ञात कवि और कृष्ण, डॉ. हरगुलाल गुप्त, अभिव्यक्ति पत्रिका अंक- 18 अगस्त 2014
13. राजस्थानी भाषा विकिपीडिया
14. गुजराती भाषा, भारतकोश विकिपीडिया
15. बानपुर और बुन्देलखण्ड- बानपुर की बोली और उसका साहित्य, पृष्ठ-39, पैरा-3, सं. राकेशनारायण द्विवेदी, जानकी प्रकाशन, ललितपुर
16. मालवी भाषा और साहित्य, अध्याय- उद्भव एवं विकास, मालवी भाषा एवं साहित्य के इतिहास की नई भूमिका, प्रो. शैलेन्द्र कुमार शर्मा, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल।
17. अवधी भाषा का व्याकरण, अवधी भाषा का विकास एवं रचनाएं अवधी विकिपीडिया
18. बघेली बोली- भारतकोश विकिपीडिया
19. छत्तीसगढी भाषा- विकिपीडिया
20. प्राकृत सर्वस्व, मार्कण्डेय, श्लोक- 6, पृष्ठ-6

21. पाइयसद्दमहण्णवो, पृष्ठ- 118, पं. हरगोविन्ददास त्रिक्रमचंद्र सेठ, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली
22. पंजाबी संस्कृत कोश एवं पाइयसद्दमहण्णवो
23. डोंगरी भाषा- विकिपीडिया
24. उदृत्वादौ, सिद्धहेमशब्दानुशासनम्, अष्टम अध्याय 1/131,
25 आदेर्यो जः, सिद्धहेमशब्दानुशासनम्, अष्टम अध्याय 1/245,
26. सिंधी भाषा –विकिपीडिया
27. मराठी भाषा- विकिपीडिया
28. कोंकणी भाषा- विकिपीडिया

डॉ. सतेन्द्र कुमार जैन
प्राकृत-अध्ययन एवं अनुसंधान केन्द्र
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय,
जयपुर परिसर, जयपुर